"हिन्दुस्तान," 17 जुलाई, 1988

ईरान में हथियारों की होड़

शशिधर खां

ईरान के आधे से अधिक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दिन-रात नये-नये हथियारों के अनुसंधान और विकास पर काम चल रहा है। ईरान के मौजूदा शासक चप्पे-चप्पे को प्रक्षेपास्त्र, विदेशी मारक विमान और लम्बी दूरी तक मार करने वाले हथियारों के निर्माण केंद्रों से भर देना चाहते हैं ताकि इन शस्त्रों के लिए अन्य देशों की दया पर न निर्भर रहना पड़े तथा गाहे-बगाहे अमरीका भी आंख न दिखा सके।

कुछ दिन पहले संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से अमरीका ने ईरान को बाहर से हथियार मंगाने पर प्रतिबंध लगाने की धमकी दी थी। ईरानी शासकों ने उस धमकी को चुनौती के रूप में लिया और तत्काल अपने ही बलबूते पर इतना सबल बनने की ठान ली ताकि उससे राष्ट्र की सुरक्षा पर कोई आंच न आने पाये।

कोंट्रा हथियार कांड के बाद से अमरीका और ईरान के बीच खींचातानी चल रही है। खासकर हाल में एक ईरानी यात्री विमान को अमरीकी नौसेना द्वारा मार गिराये जाने से तो सम्बन्ध इतने कटु हो गये हैं कि ईरान ने बदले की भावना से सारी तैयारियां शुरू कर दी है।

ईरान में एक प्रकार से बिल्कुल नयी क्रांति का वातावरण तैयार हो रहा है। इस हवा का रुख ठीक वैसा ही है जैसा कि छठे दशक के पूर्वार्द्ध में सोवियत संघ से सम्बन्ध विच्छेद होने के बाद चीन में देखने में आया था। इस्लामी गणतंत्र ने बड़े औद्योगिक देशों से भारी प्रौद्योगिकी की जानकारी हासिल करने के लिए अपने यहां के प्रतिभाशाली छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए यूरोप भेजना आरम्भ कर दिया है। अन्य मदों में कटौती करके रक्षा बजट बहुत बड़ा कर दिया गया है और बहुत सारे अन्यान्य कारखानों को हथियार फैक्ट्री में बदला जा रहा है। १२ हजार से भी ज्यादा छोटे-छोटे वर्कशॉप रक्षा सामान बनाने में जुट गये हैं।

हथियारों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने को प्रतिबद्ध ईरान के रक्षामंत्री ने पिछले सप्ताह अपने सबसे जबर्दस्त मारक विमान को सफल परीक्षण की घोषणा की। यह अमरीकी लड़ाकू विमान एफ-१६ के मॉडल पर बनाया गया है। पूरी तरह अपने यहां उपलब्ध साधनों की बदौलत सातवें दशक से ही ईरान इसकी तैयारी में जुटा था, जब ईरानी रक्षा वैज्ञानिकों ने आकाश से जमीन पर हमला करने वाले अमरीकी एयरक्राफ्ट एफ. एफ.-५ बनाने की पूरी क्षमता हासिल कर ली थी।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार ईरान ने खुले अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से मिग-२१ खरीदा है और इराक के खिलाफ इस्तेमाल भी किया है। अब मिग-२१ इंजन अपने देश में ही बनाये जायें, इसके लिए मुंहमांगी रकम देकर चोरी-छिपे विशेषज्ञों को बुलाया जा रहा है। इससे जाहिर है कि एयरक्राफ्ट उत्पादन के क्षेत्र में ईरान की महत्वाकांक्षा काफी बढ़ गयी है।

ईरान ने अब प्रशिक्षक एयरक्राफ्ट भी स्वयं बनाना शुरू कर दिया है। अब तक उसके लिए अमरीका के सामने हाथ फैलाना पड़ता था। इसमें बिना चालक के कैमरायुक्त विमान का निर्माण भी शामिल है, जो अभी तक किसी खाड़ी देश के पास नहीं है। खाड़ी के कूटनीतिक हल्कों में ईरान को हथियारों के आविष्कार और अनुसंधान का मास्टर कहा गया है।

पहली एकाध झड़पों में अमरीका को भी अच्छी तरह यह महसूस हो गया कि ईरान अब उतना कमजोर नहीं रह गया कि उसकी तड़ी बर्दाश्त कर ले। खाड़ी में निर्बाध चक्कर लगाते अमरीकी जहाजों पर जब जून के प्रथम सप्ताह में ईरानी फेंटम एफ.-४ एयरक्राफ्टों ने हमला किया तो अमरीकी नौसेना के लिए बचना मुश्किल हो गया था। उसी समय पहली बार संसार ने जाना कि ईरान के पास भारी संख्या में एफ-४ और एफ-५ विमान मौजूद हैं। मगर अभी भी ईरान के पास इराक के मुकाबले लड़ाकू विमानों की संख्या कम है। इराक के पास ६०० कंबैट विमान हैं और दोनों खाड़ी देशों का अनुपात ६:१ है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार ईरान लगभग अपनी जरूरतों के मुताबिक हथियार बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है। उसके पास छोटे हथियार, बंदूक और थोड़ी पीछे हटकर गोली दागने वाले राइफलों के अलावा युद्ध के मैदान में सबसे ज्यादा कहर मचाने वाले शक्तिशाली १७० एम. एम. होवित्जर कलाशनिकोव असॉल्ट राइफलें भी हैं।

रॉकेटों से छोड़े जाने वाले बहूद्देशीय बमों का निर्माण कार्य अयातुल्ला खुमैनी के पदार्पण के साल भर के अन्दर-अन्दर हो गया था। उसके तुरन्त बाद रक्षा शोधकर्ता १२० एम. एम. मोर्टार और तोपखाना बनाने में लग गये थे। अमरीका से सम्बन्ध खराब होने के बाद से ईरान को हथियारों के मामले में सक्षम बनाने में सोवियत संघ ने अप्रत्यक्ष रूप में काफी मदद पहुंचायी है। सोवियत निर्मित फाग-७ के मॉडल के जमीन पर मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों और टैंक भेदी प्रक्षेपास्त्रों के टेक्नीक ईरान को सोवियत विशेषज्ञों ने ही बतायी है। ऐसे प्रक्षेपास्त्रों को ईरान में एमाब (बाज) कहा जाता है। १९८६ के दिसम्बर में ईरान ने इराक के खिलाफ उन प्रक्षेपास्त्रों का जमकर इस्तेमाल किया था। अब जमीन से जमीन पर ३०० किलोमीटर की दूरी तक मार करने वाले रूसी स्कूड-बी के डिजाइन के चीनी प्रक्षेपास्त्र निर्माण पर तेजी से काम हो रहा है। अभी तो इसका इस्तेमाल इराक के खिलाफ किया जायेगा पर जरूरत पड़ने पर अमरीका को भी बख्शा नहीं जायेगा।

ईरान की सर्वोच्च सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता अली अकबर हाशमी रफसंजानी ने कहा है कि ईरान को सोवियत संघ से मदद मिल रही है, इस बात का सबूत उस समय मिला जब पिछले वर्ष के आरम्भ में इराक के काजो क्षेत्र में ईरानी सैनिकों ने सोवियत संघ में बने जहाज नष्ट करने वाले एस. एस.-दो प्रक्षेपास्त्र जब्त किये। इस जीत से ईरान ने विश्व को आश्चर्य में डाल दिया जब सबको पता चला कि उसके पास पनडुब्बियां भी हैं।

चीन की अरब और खाड़ी नीति में अचानक परिवर्तन आया है और इन देशों को धड़ाधड़ चीन से भारी-भारी हथियार मिल रहे हैं। हाल में सऊदी अरब ने भी चीन से प्रक्षेपास्त्र खरीदे हैं। इससे अमरीका इतना घबड़ा गया कि विदेश मंत्री जार्ज पी. शुल्ज दौड़े-दौड़े चीन शासकों को समझाने पेइचिंग पहुंच गये कि अरब और खाड़ी देशों को हथियार देना चीन के लिए फायदे का काम नहीं है। अमरीका को ईरान से ज्यादा परेशानी सऊदी अरब को हथियार मिलने से है क्योंकि ईरान को तो पिछले तीन वर्षों से चीन से हथियार मिल रहे हैं।

दरअसल चीन ने यह नीति खाड़ी में शक्ति संतुलन बनाये रखने के लिए अपनायी है। सोवियत संघ एक अर्से से इराक को मदद दे रहा है और वो भी इसलिए की ईरान को अमरीका से सहायता मिल रही थी। अमरीका से सम्बन्ध खराब होने के बाद की स्थिति कमजोर पड़ने लगी और दूसरी तरफ इराक में रूसी हथियारों का आना जारी रहा। ऐसी स्थिति में एक खेमे के सहारे अपनी दुंदुभी बजाते रहने के लिए चीनी नेताओं ने ईरान के प्रति सहानुभूति दिखायी और हथियार भेजने का सिलसिला शुरू हो गया। रूस से भी ईरान के सम्बन्ध खराब नहीं हैं। मगर चीन की तरफ से खुलेआम सोवियत हथियार नहीं आ रहे हैं। यह दोस्ती चीन के लिए जहां प्रसन्नता की बात है वहीं भारत और रूस के मन में कई शंकाएं उठ गयी हैं। पाकिस्तान और चीन के बीच पिछले वर्ष अक्तूबर में एक संधि हुई, जिसके मुताबिक ईरान को आयात-निर्यात के लिए पाकिस्तानी बंदरगाहों का इस्तेमाल करने की पूरी छूट मिल गयी। इतना ही नहीं, ईरान अपने दोस्त उत्तरी कोरिया का इस्तेमाल भी चीन से हथियारों से भरे पोत मंगाने के लिए कर रहा है। इन सब घटनाओं से अमरीकी शासक काफी चिन्तित हैं।